फिर फूटेगें, अगणित अंकुर, विपुल विटप संभार।
शस्य श्यामला धरा अखण्डित, पाएगी विस्तार।। 66

देवदारू फिर से लहराएं, ऊँचे उठें चिनार।
फिर से श्री लौटे नगरी में, मिटे पाप का भार।। 67

भव[1] का अनुग्रह हो मिटे, भावी कुफल भवभूति[2] हो।
अनुभव करें भय सकल खल, अति दनुज दल अभिभूति[3] हो।
वैभव बढ़े सर्वत्र मंगल, शान्ति की अनुभूति हो।
संभव गमन हो श्रेय पथ पर, ज्ञान की उद्भूति हो।।68

इति

1. शिव 2. जगत का कल्याण 3. पराजय

कवि परिचय

राम और श्रीकृष्ण ने लिया जहां अवतार।
पावन उत्तर प्रान्त जो संस्कृति का आधार ।।1।।

गंगा यमुना से घिरी धरा नमन के योग्य।
पाया उस पर जन्म है जन यह यदपि अयोग्य ।।2।।

मैनपुरी जनपद सुभग समतल उर्वर हृद्य।
श्यामल पूरा शस्य से जलयुत ऋतु अनवद्य ।।3।।

करहल नगर समीप ही सढ़ नामक है ग्राम।
घिरा सरोवर से जहां तुंग भवन अभिराम ।।4।।

निज कुल और स्वजन्म का देता कुछ इतिहास।
पूर्वज आशिष निधि सबल पाता नर विश्वास ।।5।।

पूर्व पुरूष आलय रहा जिनका ग्राम समान,
सढ़ नामक फिर ग्राम में आकर बसे समान ।।6।।

पाण्डेय ब्राह्मण बहुल सुविपुल ग्राम धनाढ्य,
तीन मिश्र परिवार युत सुविदित चरित गुणाढ्य ।।7।।

निर्मित आयत भवन कर रोपित शुभ अश्वत्थ,
विकिरित गुण सौरभ हुए पूर्णायुष्य दिवस्थ ।।8।।

यमुनातट ब्रज भूमि में जो तरू सहित तमाल,
उगता उसके नाम पर सुत था झाऊलाल ।।9।।

उनसे जन्मे चार सुत अग्रज मिड्ढालाल,
मेघनाद बलविपुलधर सुन्दर सुन्दर लाल ।।10।।

सबसे छोटे तनय थे पण्डित होरी लाल,
प्रांशुदेह सस्मितवदन उन्नत जिनका भाल ।।11।।

लोकरीतिज्ञाता मृदुल कर्मठ कुशल विनीत,
शिव पूजक धृतक्षिप्रता जनप्रिय सदा अभीत ।।12।।

ग्राम अचलपुर वासिनी अचल स्नेह की मूर्ति,
कलावती उनको मिलीं भव कर्त्तव्यप्रपूर्ति ।।13।।

ईशकृपा फलवत हुए अंगज चार प्रसूत,
पर गिरिजा देकर चले मां को व्यथा अकूत ।।14।।

नीति–युक्ति भूषित सुमति अग्रज दाऊ दयाल,
क्षमाशील जनप्रिय सुखद सुत भगवान दयाल ।।15।।

अनुज महेश्वर विक्रमी पाकर सबका स्नेह,
रहते अति निश्चिंत हो मोद धाम था गेह ।।16।।

पर जब यह भ्रातात्रयी हुई लब्ध कैशोर्य,
गए जनक सुरधाम को प्रकट काल का क्रौर्य ।।17।।

माता किन्तु कलावती थीं अब धृति का रूप,
दृढ़िमा का प्रतिमान हो सही शीत बहु धूप ।।18।।

बड़े किये तीनों तनय शिक्षित सबल सुयोग्य,
पुनः प्रसादित मनीषा मानस लब्धारोग्य ।।19।।

निज स्वभाव प्रतिकूल अति पाया पुलिस विभाग,
किन्तु नहीं भगवान ने छोड़ा प्रभु अनुराग ।।20।।

मध्यदेश भोपाल में चिरतक रहे पदस्थ,
सत्यनिष्ठ कर्मठ कुशल हो शासन विश्वस्त ।।21।।

बैजनाथ दुहिता प्रयत ग्राम सेमरा नाम,
रामसहेली को वरा पावन हुआ सुधाम ।।22।।

सरल हृदय ममतामयी दयाद्रवित ऋतपूत,
एक पुत्र तनुजा त्रयी जिनसे हुई प्रसूत ।।23।।

प्रथमागत मिथिलेश है फिर ममता अवतार,
पुत्रि तृतीया नीरजा शैशव लीला सार ।।24।।

मुझपर यह अनुजात्रयी पुष्कल रखती स्नेह,
रहा सदा सुखशान्ति का धाम हमारा गेह ।।25।।

पिता मिले भगवान से माता रामसहेलि,
संन्तति जीवन क्यों न हो सन्तत वर्धित केलि ।।26।।

चैत्र मास तिथि चतुर्थी, शुक्ल पक्ष शशिवार।
प्रातः दशवादन समय, लिया मनुज वपु धार ।।27।।

दो सहस्त्र पन्द्रह रहा, विक्रम का वह अब्द।
पंडित होरी लाल गृह, मुखर पौत्र का शब्द ।।28।।

मेष राशि शुभ लग्न वृष, भरणी था नक्षत्र।
श्री भगवान दयाल ग्रह, उदित हुआ सत् पुत्र ।।29।।

तुला राशि गुरू राहु थे, बुध रवि थे मीनस्थ।
धनु में शनि शशि मेष में, भौम शुक्र मकरस्थ ।।30।।

उस बेला बव करण में, योग रहा विष्कुम्भ।
पीड़ा के थे विषम क्षण, शिव का था अवलम्ब ।।31।।

मध्य नाड़ि गजयोनि में, मानव गण में गण्य।
राम सहेली जननि से, उपजा व्यक्ति नगण्य ।।32।।

शिव कुमार था रख दिया, जनकाग्रज ने नाम।
अशिव कार्य उसके सदा, अनृत हुआ अभिधान ।।33।।

आयत आलय सामने पीपल की घन छांह।
चलना सीखा जहां पर पकड़ तात की बांह ।।34।।

सम्मुख सर मैं तैरते नाना वर्ण विहंग।
विस्मृति में जाते नहीं वे बचपन के रंग ।।35।।

मध्यदेश का राजपुर गिरि सर युत भोपाल।
वर्ष अठारह का यहां बीता विद्या काल ।।36।।

सर्व प्रथम रहकर सदा, शिक्षा की शुभ प्राप्त।
गुरूजन स्नेह सदा रहा, मित्रमान बहु आप्त ।।37।।

संस्कृत भाषा भारती, अर्थ शास्त्र भूगोल।
सुधामयी गुरूकृपा से, पाया ज्ञान अमोल ।।38।।

विद्यार्जन रत छात्र था, वधू मिली रत्नेश।
जीवन तब से बन गया, सुखद प्रणय रत्नेश ।।39।।

हुआ उदित आलोक फिर श्रेयस्कर श्रेयांश।
अंगज द्वय सब जीव सम उसके दिव्य प्रभांश ।।40।।

केन्द्रीय शासन का हुआ, अधिकारी उपयुक्त।
अपनी निष्ठा लगन को, किया सतत सुप्रयुक्त ।।41।।

मध्य देश कटनी नगर, मध्य किया जब कार्य।
प्रभु ने लेखन कर्म को, बना दिया अनिवार्य ।।42।।

सतत प्रेरणा शम्भु की, लिखा गई ''राधेय''।
इस जन को कवि कर्म तो, रहा सदा अज्ञेय ।।43।।

चौदह सर्गों में किया, वसु का चरित निबद्ध।
मुदित देख उद्यम हुए, वांङ्गमय के तप वृद्ध ।।44।।

जिसकी पावन कृपा ही, लिखा गई 'राधेय'।
पुनः बनाया उन्होंने ''अश्वत्थामा'' गेय ।।45।।

बीस शती के शेष थे, मात्र चार जब अब्द।
संयोजित होने लगे, ईश कृपा से शब्द ।।46।।

आशिष यदि देते नहीं, कवि वरेण्य विद्वान।
जलनिधि कैसे तैरता, यदि न सदय, ईशान ।।47।।

अष्टादस अध्याय में अश्वत्थामा वृत्त।
वर्णित विविध प्रकार के पन्द्रह शतक सुवृत्त ।।48।।

निज सक्षमता भूलकर सहता नित उत्पात ।
विह्वल सा गज हो रहा, आक्रामक श्वाव्रात ।।49।।

देख दशा यह दैन्य की द्रवित हृदय उच्छ्वास ।
निकल पड़ा बहु रोकन मरू के कुटिल प्रयास ।।50।।

उतरी सद्यः चित्त में शंकरकृपामरीचि ।
सृ जनधार वैशाख में बही समुच्छलवीचि ।।51।।

दो हजार नौ वर्ष में पुनः सृजन की राह ।
पकड़ी अब थी वीर रस अभिव्यंजन की चाह ।।52।।

डेढ़ मास में अवतरित लघुकृति मरू अभिधेय ।
इंगित करती शत्रु प्रति सम्प्रति नीति विधेय ।।53।।

अट्टहास यह आर्य का कायरता उपहास ।
उद्यम नोदक साधु का तम वध हेतु प्रकाश ।।54।।

दीर्घसूत्रता हेतु असि संशय हेतु त्रिशूल ।
विपदासम उनके लिए जो जन के प्रतिकूल ।।55।।

आर्य चरित ज्ञापक विशद, खल मानस को ताप ।
सुधा तुल्य सप्रताप को शत्रु हेतु अभिशाप ।।56।।

अर्पित है मां शारदा को तीसरा प्रसून ।
मति अनुभव पटुता कहां कवि कौशल अतिन्यून ।।57।।

मूक समर्थक भी बन जाएँ, रिपुजन में कुछ लाख।
कर सकते हैं नगर खण्डहर, ग्राम जलाकर राख।।36

जब जनमत हो जाता क्रमशः, शासन के प्रतिकूल।
परम शक्तिशाली सत्ता की, भी हिल जाती चूल।।37

निष्ठा और भीति ही होते, शासन के आधार।
दोनों का ही ह्रास हमें है, करना भली प्रकार।।38

अर्पित करने प्राण मिल गए, हमको युवा अनेक।
जिनमें नहीं विवेक घृणा का, है केवल अतिरेक[1]।।39

हमने क्रमशः किया प्रणोदित[2], अति अमार्ज्य[3] उन्माद।
अतः यन्त्रवत् स्वजनों तक को, मार रहे अविषाद[4]।।40

शत्रु शक्ति का ह्रास चल रहा, अनिर्बाध[5] अविराम[6]।
कुछ वर्षों में सौरभगर्वित, उजड़ेगा आराम[7]।।41

परबलदमन[8] सदा ही माना, हमने कार्य पुनीत।
सम्मुख आए बिना किया यह, कूटनीति की जीत।।42

हमें भूलवश मान रहे थे, निर्बल और असार।
भोग रहे वे मूढ़ वेदना, क्षति का अमित[9] प्रसार।।43

1. बहुतायत 2. उकसाना, प्रेरित करना 3. न मिटने योग्य 4. बिना खेद के 5. बिना बाधा, रुकावट के 6. लगातार बिना रूके 7. उद्यान बाग 8. शत्रु शक्ति का उच्छेद 9. जिसे मापा नहीं जा सकता

मरु और मेरु

खण्ड काव्य

शिवकुमार मिश्र

प्रकाशक

सहेली प्रकाशन
142/3 AR राजहर्ष कालोनी
नयापुरा कोलार रोड भोपाल